केला

रोपण

रोपण:

रोपण का सीजन

रोपण मई - जून में या सितंबर - अक्तूबर में किया जा सकता है।

स्पेसिंग :

रोपण से पहले भूमि के एक हैक्टेयर हिस्से में 50 टन एफवाईएम का प्रयोग करके भूमि को उपजाऊ बनाया जाता है। गड्ढों में रोपण के मामलों में 10-15 किलो ग्राम एफवाईएम/गड्ढा का प्रयोग किया जाता है। स्पेसिंग रोपण की फसल, मिट्टी की उर्वरता और मौसम के अनुसार बदलता रहता है। विभिन्न् रोपण फसलों के लिए निम्नलिखित कुछ सामान्य स्पेसिंग अनुसूचियां दी गई हैं :-

कल्टीवर	**स्पेसिंग (मीटर)**	**सकरों की सं0**	
		प्रति हे0	प्रति एकड़
'पूवन' 'मोनथन' 'रसथाली' 'काली(नादन)' 'नेन्दरन'	2.13 x 2.13 or 2.1 x 2.1	2150	870
डवारफ कैवेडिंश	1.7 x 1.7 or 1.8 x 1.8	3550	1440
('बसरल', 'काबुली')		3000	1210
'रोबुस्ता' (हरीचल)	1.8 x 1.8	3000	1210
'नेनडरन'	1.8 x 1.8 or 2.4 x 2.4	1700	684
'हिल बनाना'	2.4 x 3.0	1350	545
	4.1 x 3.6	670	270
	4.8 m x 4.9 m	420	170
निर्यात केला किस्म	1.7 x 1.75		

टिशू कल्चर पौधों के मामलों में 1.65 x 1.65 मीटर की दूरी को अपनाया गया है। सिफारिश स्पेसिंग के आधार पर 45 सेमी. x 45 सेमी. x 45 सेमी. गड्ढों का साइज तैयार किया जाता है। गडढ़ों में टॉपसोइल, वैल डिकोमपोस्ड एफवाईएम तथा रेत को 1:1:1 अनुपात में बराबर मात्रा में डाला जाता है। पोलीबैग को फाडकर हटा दिया जाए तथा भरे हुए गडढे के मध्य में जड़ों को इधर- उघर किए बिना पौधे को लगाया जाना है। मिट्टी स्तर को पोलीबैग के ही स्तर पर बनाए रखा जाना चाहिए।

रोपण की विधि :

रोपण के दो तरीके हैं :

पिट विधि: रिहजोमस के रोपण हेतु 0.5mx0.5mx0.5m के गड्ढे खोद जाते हैं। हालांकि यह विधि बहुत है श्रमसाध्य और मंहगी है। इसका केवल एक ही लाभ है कि जब आवश्यक गहराई पर रोपण किया जाता है तो कोई अर्थिंग अप आवश्यक नहीं है। वर्तमानमें यह विधि लोकप्रिय नहीं हैं।

कुंड विधि: यह एक बहुत ही सामान्य विधि है जिसमें एक ट्रैक्टर या खोदने वाले के द्वारा 1.5 मीटर की दूरी पर 20-25 सेंमी. गहराई वाले फूरोज खोले जाते हैं तथा इन फूरोज में रिहजोमस रोपित किए जाते हैं। इस विधि में उजागर रिहजोमस को कवर करने के लिए अर्थिंग अप की अक्सर आवश्यकता होती है।